



प्रगति, विकास और आशा सीएसआईआर समाचार

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद का गृह बुलेटिन

वर्ष 11 अंक 8

www.csir.res.in

अगस्त 2023

सीएसआईआर-सीआरआरआई भारत ने विश्व की नवीनतम इस्पात सड़क तकनीक विकसित की

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने घोषणा की कि भारत ने विश्व की नवीनतम इस्पात सड़क (स्टील रोड) तकनीक विकसित की है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद—केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर—सीआरआरआई), नई दिल्ली, जिसकी स्थापना 1952 में हुई थी, ने क्रांतिकारी इस्पात अपशिष्ट युक्त सड़क (स्टील स्लैग रोड) तकनीक के विकास का बीड़ा उठाया है, जो सड़क निर्माण में इस्पात संयंत्रों के अपशिष्ट स्टील स्लैग के बड़े पैमाने पर उपयोग की सुविधा प्रदान करता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि जून 2022 में, गुजरात स्थित सूरत नगर आयोग और हजीरा में आर्सेलर मित्तल/निप्पोन स्टील (एएम/एनएस) द्वारा



सीएसआईआर—केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई), केंद्रीय इस्पात मंत्रालय, सरकारी थिंक-टैंक नीति

चलाई जा रही एक संयुक्त उद्यम परियोजना के एक हिस्से के रूप में संसाधित स्टील स्लैग (औद्योगिक अपशिष्ट) से

सड़क बनाने वाला देश का पहला शहर बन गया।

अधिकांश इस्पात संयंत्रों में इस्पात बनाने की प्रक्रिया के दौरान अयस्क से पिघली अशुद्धियों से यह स्लैग बनता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि सड़कों को पक्का करने में स्टील स्लैग तकनीक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के “अपशिष्ट से सम्पदा (वेस्ट टू वेल्थ)” मंत्र के अनुरूप है। यह अभिनव तकनीकी पहल अपशिष्ट स्टील स्लैग और प्राकृतिक समुच्चय के अस्थिर खनन तथा उत्खनन के कारण होने वाले पर्यावरणीय क्षरण की समस्या का भी समाधान करती है। उन्होंने कहा कि सीएसआईआर-सीआरआरआई ने सड़क निर्माण में अपशिष्ट पदार्थों के सतत उपयोग के लिए कई प्रमुख प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं।

प्रायोगिक तौर पर एएम/एनएस संयंत्र के स्लैग से पक्की की गई छह लेन वाली सड़क का विस्तार मौसम के साथ-साथ हजारों भारी ट्रकों का आघात भी सहन करती है, हालांकि इस सड़क की सतह प्राकृतिक समुच्चय से बनी सड़कों की तुलना में 30 प्रतिशत कम मोटाई की है।

सीमा सड़क संगठन (बीआरओ) ने भी भारत-चीन सीमा क्षेत्र के साथ अरुणाचल प्रदेश में लंबे समय तक चलने वाली अधिक भार वहन करने योग्य (हेवी-ड्यूटी) सड़क के निर्माण के लिए स्टील स्लैग का उपयोग किया है।

यह स्टील स्लैग सामग्री टाटा स्टील लिमिटेड द्वारा निःशुल्क दी गई और भारतीय रेलवे द्वारा जमशेदपुर से अरुणाचल प्रदेश तक निःशुल्क पहुंचाई गई। इसके अलावा, भारत की सबसे बड़ी सड़क निर्माण एजेंसी, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने एनएच-66 (मुंबई-गोवा) पर स्टील स्लैग रोड तकनीक का



सफलतापूर्वक परीक्षण किया।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने नई दिल्ली स्थित केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई) के दोरे के दौरान यह बात कही कि इस्पात अपशिष्ट सड़क (स्टील स्लैग रोड) की लागत न केवल पारंपरिक निर्माण (पेविंग) की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत सस्ती है, बल्कि वे अधिक टिकाऊ और मौसम की अनिश्चितताओं के प्रति प्रतिरोधी भी हैं।

“ऐसा पाया गया है कि स्टील स्लैग सड़कें कोलतार (बिटुमिनस) वाली सड़कों के तीन से चार वर्ष के जीवनकाल की तुलना में दस वर्ष तक चलती हैं, जिससे रखरखाव की लागत में तेजी से कमी आई है। सूरत में, स्टील स्लैग रोड की सतह (टॉप) को कटाव वाले खारे समुद्री वातावरण का सामना करने के लिए उपयुक्त पाया गया है, जबकि ठंडे, बर्फीले और मूसलाधार बारिश वाले सबसे कठिन हिमालयी क्षेत्रों में भी स्टील स्लैग रोड को लंबे समय तक चलने वाला पाया गया है।

भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक है। प्रति टन स्टील उत्पादन के साथ लगभग 200 किलोग्राम इस्पात (स्टील) स्लैग ठोस अपशिष्ट के रूप में उत्पन्न

होता है। देश में स्टील स्लैग का उत्पादन लगभग 01 करोड़ 90 लाख टन प्रति वर्ष है और 2030 तक इसके 06 करोड़ टन तक पहुंचने की सम्भावना है। स्टील स्लैग की यह भारी मात्रा स्टील संयंत्रों में और उसके आसपास बड़े टीलों के रूप में एकत्र हो जाती है और हवा, पानी और भूमि प्रदूषण का स्रोत बन जाती है। प्रसंस्कृत स्टील स्लैग समुच्चय के रूप में स्टील स्लैग का संभावित मूल्यांकन स्टील स्लैग रोड के रूप में सड़क निर्माण के लिए प्राकृतिक समुच्चय का एक पर्यावरण अनुकूल लागत प्रभावी विकल्प प्रदान करता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ने केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई) और इस्पात, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग, शहरी विकास और ग्रामीण विकास जैसे विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों, सरकारी थिंक-टैंक नीति आयोग, राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) और राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईआईटी) जैसे इंजीनियरिंग संस्थानों के अलावा निजी क्षेत्र की बड़ी इस्पात

कंपनियां जैसे टाटा स्टील, आर्सेलर मित्तल निप्पॉन स्टील इंडिया, जेएसडब्ल्यू स्टील और राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड के बीच अधिक जुड़ाव, तालमेल और संसाधनों की पूरिंग का आह्वान किया।

उन्होंने कहा, “अब विचार सड़क निर्माण के पैमाने को बढ़ाने का है। एक बार

जब आप बाजार में पहुंच जाते हैं, तो आपका उद्योग के साथ जुड़ाव हो जाता है, उद्योग से इसे बेचने की उम्मीद की जाती है और ऐसा करने के लिए उन्हें खुद का प्रचार करना होगा।”

पिछले नौ वर्षों में लगभग 50,000 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग जोड़े गए हैं, जबकि 2014 के बाद से निर्माण की गति 12 से दोगुनी से 29 किमी/दिन हो गई है। इस वर्ष मई में, भारत ने 100 घंटे की समय सीमा के भीतर सड़क 112.5 लेन किलोमीटर बिटुमिनस कंक्रीट की सड़क बिछाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

उन्होंने कहा, “भारत का राष्ट्रीय

राजमार्गों का 01 लाख 45 हजार किमी लम्बा नेटवर्क अब संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा है और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार के पिछले नौ वर्षों में इसमें 59 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

इस उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए



देश में राष्ट्रीय राजमार्ग का निर्माण अगस्त 2022 में 419 किलोमीटर से बढ़कर जनवरी 2023 में 1,029 किलोमीटर हो गया।”

अपने दौरे के दौरान, डॉ. जितेंद्र सिंह ने वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) का ‘एक सप्ताह एक प्रयोगशाला (वन वीक वन लैब) कार्यक्रम भी शुरू (लॉन्च) किया। उन्होंने ‘वन वीक वन लैब’ अभियान के हिस्से के रूप में

सीआरआरआई के निर्देशित दौरे पर ले जाए जा रहे छात्रों के साथ भी बातचीत की।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) मिशन परियोजना के लिए पिलानी में केन्द्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (सीईईआरआई) के साथ साझेदारी के लिए केन्द्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (सीआरआरआई) की सलाहना की, जो परिवहन प्रणालियों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) की क्षमता का उपयोग करना चाहता है।

यात्रा के दौरान, मंत्री महोदय ने मोबाइल कोल्ड मिक्सर-कम-पेवर, जो विशेष रूप से ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सड़कें बनाने के लिए विकसित किया गया है और पैच फिल-पॉट होल रिपेयर मशीन, जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में सड़कों की त्वरित और लागत प्रभावी मरम्मत करने में सक्षम बनाती है, का निरीक्षण किया।

सीएसआईआर-भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-आईआईटीआर), में विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस का आयोजन किया गया

दीर्घ आयु हेतु मंत्र

“शुद्ध खाओ, सुरक्षित खाओ
परंतु खाद्य को बर्बाद न करो” —
सीएसआईआर-भारतीय विषविज्ञान

अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-आईआईटीआर), लखनऊ में एसोसिएशन ऑफ फूड साइंटिस्ट्स एंड टेक्नोलॉजिस्ट इंडिया (एएफएसटीआई) लखनऊ चैप्टर की

सहभागिता में 7 जून, 2023 को 5वां विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस मनाया गया। इस वर्ष खाद्य दिवस का थीम “खाद्य मानक जीवन बचाते हैं” है।



समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती रीता तेवतिया, सेवानिवृत्त आईएएस, पूर्व सचिव (वाणिज्य) एवं पूर्व अध्यक्ष, भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) ने अपने संबोधन में खाद्य मानकों एवं खाद्य सुरक्षा के महत्व पर बल दिया। संबोधन के दौरान उच्च प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों से जुड़े विविध स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में सविस्तार अवगत कराया तथा पारंपरिक आहार के महत्व पर बल दिया। श्रीमती तेवतिया ने आशा व्यक्त किया कि सीएसआईआर-आईआईटीआर जैसी प्रयोगशालाएं खाद्य सुरक्षा और नए खाद्य मानकों के विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगी तथा 'सुरक्षित खाएं, स्वास्थ्य हेतु लाभकारी खाएं' के व्यापक मिशन की दिशा में सक्रिय रूप

से अपना योगदान देना जारी रखेंगी। मुख्य अतिथि महोदया ने प्रशिक्षित जनशक्ति की आवश्यकता के साथ-साथ समाज को स्वस्थ बनाने, आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाने एवं खाद्य जनित बीमारियों को रोकने हेतु नियामक निकायों एवं उद्योगों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं की आवश्यकता पर विस्तृत प्रकाश डाला।

विशिष्ट अतिथि श्री दिव्यांशु पटेल, आईएएस, विशेष सचिव एवं अपर आयुक्त, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, उत्तर प्रदेश ने श्रोताओं को सरकार की परिकल्पना एवं कार्य योजना तथा उत्तर प्रदेश राज्य में बड़ी संख्या में खाद्य सुरक्षा प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों से अवगत कराया।

डॉ. भास्कर नारायण, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईटीआर ने अपने

अध्यक्षीय संबोधन में "बिना बर्बाद किए", "शुद्ध भोजन", "स्वास्थ्य हेतु लाभकारी भोजन" एवं "सुरक्षित भोजन" की अति आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सभी को हर दिन दो बार सुरक्षित भोजन करने का मूलभूत अधिकार होना चाहिए। डॉ. नारायण ने इस वर्ष के खाद्य सुरक्षा दिवस की डब्ल्यूएचओ की थीम के महत्व को दोहराया। इस वर्ष की डब्ल्यूएचओ की थीम खाद्य जनित जोखिमों को रोकने, उनका पता लगाने एवं प्रबंधन करने की आवश्यकता पर बल देती है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि महोदया ने सीएसआईआर-आईआईटीआर में विकसित विभिन्न प्रक्रियाओं एवं प्रौद्योगिकियों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एक "मिलेट रेसिपी

बुकलेट जारी की गई। इस लघु पुस्तक में मोटे अनाजों (मिलेट्स) से बनने वाले विभिन्न व्यंजन के साथ-साथ मिलेट की पोषण संबंधी लाभकारी जानकारी का भी उल्लेख है।

इस पुस्तिका को सीएसआईआर-आईआईटीआर एवं इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, लखनऊ द्वारा संयुक्त रूप से संकलित किया गया है। इसके अतिरिक्त, जिज्ञासा वैज्ञानिक सामाजिक उत्तरदायित्व प्रयास के अंतर्गत सम्मानित अतिथियों द्वारा **“खाद्य सुरक्षा में डिजिटल जागरूकता”** पर एक ब्रोशर जारी किया गया। यह ब्रोशर राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय नियामक एजेंसियों की ओर से सामान्य जन हेतु खाद्य सुरक्षा संबंधी सूचना का द्विभाषी संकलन है।

इस अवसर पर श्रीमती रीता तेवतिया एवं श्री दिव्यांशु पटेल ने सीएसआईआर-आईआईटीआर द्वारा विकसित किफायती **“रेबिड हीमोग्लोबिन टेस्ट किट”** भी जारी किया। इसके साथ-साथ उन्होंने निबंधवचित्रकला प्रतियोगिता के विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार भी प्रदान किए।

भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) ने इस अवसर पर आमजन की जागरूकता और जुड़ाव हेतु आईआईटीआर के मुख्य परिसर में अपनी सचल परीक्षण प्रयोगशाला का भी प्रदर्शन



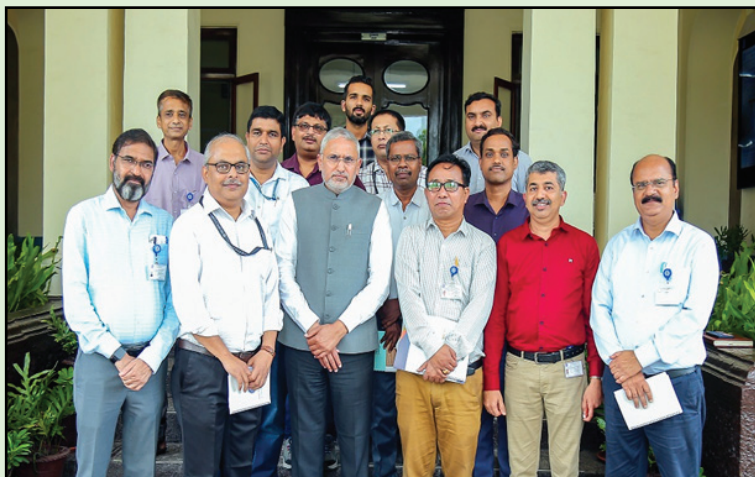
किया।

समारोह के पूर्व में कैलाश चंद्र खुल्बे, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-आईआईटीआर ने स्वागत संबोधन दिया और समारोह के अंत में डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

गुजरात के राज्यमंत्री श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा ने किया सीएसएमसीआरआई का दौरा

गुजरात सरकार के सहकारिता, नमक उद्योग, मुद्रण एवं स्टेशनरी, प्रोटोकॉल (सभी स्वतंत्र प्रभार), सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, कुटीर, खादी और ग्रामीण उद्योग, नागरिक उड्डयन मंत्री माननीय श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा द्वारा 30 जून को सीएसआईआर-केंद्रीय नमक और समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसएमसीआरआई) भावनगर का दौरा किया गया। इस दौरान उन्होंने सीएसएमसीआरआई में हो रहे शोध-कार्यों में रुचि दिखाते हुये वैज्ञानिकों से

चर्चा की। गुजरात राज्य में नमक उद्योग को आगे ले जाने हेतु उन्होंने नमक कार्यों से जुड़े वैज्ञानिकों से विशेष चर्चा की और हो रहे शोध कार्यों को पावरपॉइंट प्रस्तुति के



माध्यम से जाना। सीएसएमसीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक और पीआरओ डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय ने बताया कि माननीय मंत्री ने संस्थान द्वारा पर्यावरण प्रदूषण आकलन, उद्योगों द्वारा उत्पन्न अपशिष्ट के सही निपटान पर भी विमर्श किया और संस्थान के वैज्ञानिकों से इन विषयों पर संधारणीय तकनीक विकसित करने का आह्वान किया। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित जल-शोधक मोबाइल बस का भी निरीक्षण किया और उसकी क्रियाविधि को समझा। इस अवसर पर संस्थान के सभी विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न पर जागरूकता कार्यक्रम

सीएसआईआर-एचआरडीसी ने कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (पीओएसएच अधिनियम): रोकथाम, निषेध और निवारण पर जागरूकता कार्यक्रम पर 3-4 मई, 2023 के दौरान दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं से सत्ताईस प्रतिभागियों कार्यक्रम ने भाग लिया। कार्यक्रम में पीओएसएच अधिनियम के कानूनी ढांचे को शामिल किया गया है, जैसे शिकायतों से निपटना, समितियों के कार्य, नियोक्ताओं के कर्तव्य, सजा और अधिकार क्षेत्र, मामलों का अध्ययन।

यह कार्यक्रम अनुभव साझा करने और पैनल चर्चाओं के माध्यम से एक अनुकूल और सामंजस्यपूर्ण कार्य वातावरण बनाने के बारे में विचार-विमर्श करने के लिए एक मंच भी प्रदान करता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के नवनियुक्त वैज्ञानिकों के लिए सीएसआईआर-एचआरडीसी परिसर में 46वां प्रेरण कार्यक्रम

विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के नवनियुक्त वैज्ञानिकों के लिए 46वां प्रेरण कार्यक्रम 30 मई-08 जून, 2023 के दौरान सीएसआईआर-एचआरडीसी परिसर में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में विभिन्न सीएसआईआर प्रयोगशालाओं और इसरो के विभिन्न केंद्रों से 43 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के माननीय एवं केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) एवं

सीएसआईआर के उपाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह ने किया।

अन्य गणमान्य व्यक्तियों में डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर और सचिव, डीएसआईआर, डॉ. राम विश्वकर्मा, प्रतिष्ठित वैज्ञानिक, प्रो. एस. अनंत रामकृष्ण, निदेशक, सीएसआईआर-सीएसआईओ, प्रो. मनोज कुमार धर, निदेशक, एसीएसआईआर, श्री महेंद्र कुमार गुप्ता, संयुक्त सचिव (प्रशा.), सीएसआईआर, श्री चेतन प्रकाश जैन, (वित्तीय सलाहकार), श्री सुरिंदर पाल सिंह, संयुक्त सचिव, डीएसआईआर और डॉ. ज्योति यादव, प्रमुख, सीएसआईआर-आरएबी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। माननीय मंत्री ने एचआरडीसी परिसर में एक पौधा भी लगाया। कार्यक्रम की शुरुआत गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन से की गई। सीएसआईआर की महानिदेशक ने मुख्य अतिथि डॉ. जितेंद्र सिंह का स्वागत किया। मुख्य अतिथि डॉ. जितेंद्र सिंह ने बीज वक्तव्य दिया।

दस दिनों के दौरान आयोजित कार्यक्रम में सीएसआईआर का दृष्टिकोण, मिशन और सीएसआईआर की संस्कृति, राष्ट्रीय और वैश्विक एस एंड टी और औद्योगिक परिदृश्य, एस एंड टी में सामाजिक अनुप्रयोग, आईपीआर, खरीद, प्रशासनिक मामले, सीएसआईआर की वित्तीय प्रणाली, निवारक



सतर्कता, लिंग संवेदीकरण आदि शामिल थे। कार्यक्रम में व्यावहारिक अभ्यास, केस अध्ययन, रोल प्ले, इंटरैक्टिव सत्र, प्रयोगशाला दौरे आदि भी शामिल थे। चेतन प्रकाश जैन, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, सेंट्रल इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (सीईएल) और एफए, सीएसआईआर के साथ सीईएल के अन्य वरिष्ठ गणमान्य व्यक्तियों ने एचआरडीसी का दौरा किया और प्रतिभागियों के साथ बातचीत की। माननीय मंत्री ने कार्यक्रम की बहुत सराहना की। प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया भी बहुत उत्साहवर्धक थी।

सीएसएमसीआरआई, भावनगर में 'वन वीक वन लैब' समारोह का आयोजन



समाज को सीएसआईआर प्रयोगशालाओं की विरासत और उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए सीएसआईआर-केंद्रीय नमक व समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई), भावनगर में 10-14 अप्रैल, 2023 के दौरान 'वन वीक वन लैब (ओडबल्यूओएल)' समारोह का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान प्रत्येक दिन विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 08 अप्रैल, 2023 को 'कर्टेन रेजर इवेंट' के रूप में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई, जिसमें मीडिया प्रतिनिधियों को सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई भावनगर परिसर में सप्ताह भर चलने वाले दिन-वार विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में आधिकारिक रूप से सूचित किया गया।

'ओडबल्यूओएल' अभियान की शुरुआत 10 अप्रैल, 2023 को संस्थान के 70वें स्थापना दिवस के अवसर पर एक भव्य

समारोह से हुई। समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र सिंह राणा, माननीय पूर्व-सांसद, भावनगर द्वारा किया गया। इस दिन को 'ओपन डे' के रूप में मनाया गया संस्थान सभी विज्ञान उत्साही लोगों के लिए यहाँ हो रहे शोध-कार्य, वैज्ञानिकों से चर्चा आदि के लिए बिना किसी पूर्व आमंत्रण के खुला था। संस्थान के अनुसंधान के तकनीकी मॉडल और शोध गतिविधियों को प्रदर्शित करने के लिए कई परिसर में प्रदर्शनी स्टॉल लगाए गए थे। निदेशक, प्रो. कन्नन श्री निवासन ने मेहमानों और आगंतुकों का स्वागत किया और माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, डॉ. जितेंद्र सिंह जी के पहल पर राष्ट्रव्यापी 'ओडबल्यूओएल' अभियान की उत्पत्ति और उद्देश्य पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर संस्थान द्वारा हिन्दी में प्रकाशित 'प्रौद्योगिकी संग्रह' का विमोचन किया गया और 07 समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर भी किए गए।

समारोह के दूसरे चरण में, संस्थान का स्थापना दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया, जिसमें डॉ. बालासुब्रमण्यम गोपालन, वैज्ञानिक सलाहकार, आईआईसीटी, हैदराबाद और श्री नीलेश एम. देसाई, निदेशक,

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, अहमदाबाद उपस्थित रहे। 'ओडबल्यूओएल' सेलिब्रेशन कमेटी के सह-संरक्षक डॉ. विश्वजीत गांगुली ने संस्थान की शोध गतिविधियों पर प्रकाश डाला। दिन भर में लगभग 500 विद्यार्थियों एवं आम लोगों ने संस्थान का भ्रमण किया। 'ओडबल्यूओएल' का उद्घाटन दिवस एक 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' के साथ समाप्त हुआ।

दूसरे दिन 11 अप्रैल, 2023 को स्टार्ट-अप और उद्योग बैठक आयोजित की गई जिसमें सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के वैज्ञानिकों, उद्योग के लोगों और स्टार्ट-अप्स ने मुलाकात की और सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के शोध परिणामों के आधार पर व्यापार के अवसरों पर चर्चा की। बैठक का उद्घाटन डॉ. डी.एस. रेड्डी, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईसीटी, हैदराबाद और डॉ. रवि मारीवाला सदस्य, अनुसंधान परिषद, सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई ने किया।

35 उद्योगों के 80 से अधिक प्रतिनिधियों, श्री श्याम बाबू, निदेशक-केंद्रीय उर्वरक गुणवत्ता नियंत्रण एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदाबाद और डॉ. माथवन, उप निदेशक-क्षेत्रीय उर्वरक नियंत्रण प्रयोगशाला, मुंबई आदि ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। संस्थान के व्यवसाय विकास समूह के प्रमुख डॉ. कमलेश प्रसाद ने उत्साही प्रतिक्रिया के लिए सभी उद्योग कर्मियों को धन्यवाद दिया और भविष्य में उद्योगों के साथ और अधिक बातचीत करने की इच्छा व्यक्त



की। सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के लाइसेंसधारियों ने समुद्री शैवाल जैव-उत्तेजक पर कृषि रसायन के क्षेत्र में अग्रणी बड़ी कंपनियों के साथ बी2बी बैठकें कीं।

‘ओडबल्यूओएल’ अभियान का तीसरा दिन 12 अप्रैल, 2023 कौशल विकास को समर्पित था जिसमें कॉलेज के छात्रों के साथ सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई की अनुसंधान विशेषज्ञता पर चर्चा की गई। प्रोफेसर एस. अनंत रामकृष्ण, निदेशक सीएसआईआर-सीएसआईओ, चंडीगढ़ ने इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया, जो छात्रों, शिक्षकों सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के वैज्ञानिकों और डॉ. स्वर्णा वी. कांत, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई,

चेन्नई, डॉ. वीरेंद्र सिंह, पिडिलाइट इंडस्ट्रीज, सुश्री ग्लैडिस नायर, आईक्रिएट, डॉ. माधवी जोशी, संयुक्त निदेशक, गुजरात बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च सेंटर, गांधीनगर, प्रो. आई. मुखोपाध्याय, पीडीईयू गांधीनगर, प्रो. के. एन. जोशीपुरा, डॉ.राजेश पटेल, निरमा यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, डॉ. आनंद भादलकर, एसटीबीआई, वडोदरा के निदेशक सहित अन्य आमंत्रित वक्ताओं के साथ समर्पित व्याख्यान-सह-चर्चा सत्रों से समृद्ध हुआ।

इस कार्यक्रम में, गुजरात राज्य के विभिन्न कॉलेजों के सैकड़ों छात्रों, 16 संकाय सदस्यों ने भाग लिया। **‘ओडबल्यूओएल’** उत्सव समिति के अध्यक्ष डॉ. पुयम सोभिंद्रो सिंह ने उत्साही प्रतिक्रिया के लिए वक्ताओं, विभिन्न कॉलेजों के शिक्षकों और छात्रों को

धन्यवाद दिया।

‘ओडबल्यूओएल’ अभियान के चौथे दिन 13 अप्रैल, 2023 को विज्ञान प्रदर्शनी और आउटरीच कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें वैज्ञानिक-छात्र संवाद, विज्ञान के प्रति उत्साही लोगों की भागीदारी और प्रख्यात हस्तियों के लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान मुख्य आकर्षण थे। इस दिन सैकड़ों छात्रों और अनेकों शिक्षकों ने संस्थान का दौरा किया। जिज्ञासा के तहत **‘साइंस आउटरीच प्रोग्राम’** का उद्घाटन डॉ. शशांक चतुर्वेदी, निदेशक, इंस्टीट्यूट फॉर प्लाज्मा रिसर्च, गांधीनगर द्वारा मुख्य अतिथि के रूप में किया गया, जिसके बाद प्रसिद्ध आमंत्रित वक्ताओं द्वारा लोकप्रिय विज्ञान व्याख्यान दिए गए जिसमें डॉ. नरोत्तम साहू, गुजकोस्ट, गांधीनगर,

प्रो. रमेश वी. उपाध्याय, कुलपति, चांगा शामिल थे। छात्रों और शिक्षकों के लिए क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, भावनगर में एक विज्ञान भ्रमण भी आयोजित किया गया, जहां उन्होंने ऑटोमोबाइल गैलरी, जैविक गैलरी और नोबेल पुरस्कार गैलरी का दौरा किया।

‘ओडबल्यूओएल’ अभियान के अंतिम दिन 14 अप्रैल, 2023 को किसानों और नमक-श्रमिकों, जो सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई की प्रौद्योगिकियों के लाभार्थी हैं, के साथ बातचीत के लिए एक समर्पित सत्र का आयोजन डॉ. बी आर अंबेडकर की 132वीं जयंती समारोह के साथ किया गया। गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों के कई किसानों और कई नमक श्रमिकों ने संस्थान और प्रदर्शनी स्टालों का दौरा किया।

समारोह का उद्घाटन मुख्य अतिथि एसडी हाई स्कूल, भावनगर के प्राचार्य

डॉ. महेश कुमार एम. डफडा ने किया।

वैज्ञानिकों द्वारा उत्सव के एक भाग के रूप में लाभार्थियों के हित के विषयों पर व्याख्यान दिए गए।

दूसरे चरण में सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समापन समारोह का आयोजन

किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. (श्रीमती) भारती बेन शियाल, माननीया संसद सदस्य, भावनगर और सम्मानित अतिथि के रूप में भावनगर नगर निगम के आयुक्त श्री एन वी उपाध्याय, आईएस की उपस्थिति थी। दोनों अतिथियों ने सीएसआईआर-सीएसएमसीआरआई के कार्यों की प्रशंसा की और भावनगर में इस



प्रकार की राष्ट्रीय प्रयोगशाला होने के लाभों के बारे में बात की। सप्ताह भर चले इस ‘ओडबल्यूओएल’ समारोह का समापन संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पीआरओ डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। पूरे समारोह का आम जनता ने गर्मजोशी से स्वागत किया और मीडिया ने इसे व्यापक रूप से कवर किया।

सीएसएमसीआरआई में बौद्धिक संपदा अधिकारों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

आजादी के अमृत महोत्सव के बैनर तले 01 से 30 जुलाई, 2023 के दौरान देश में मनाए जा रहे राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा महोत्सव के दौरान, सीएसआईआर-केंद्रीय नमक और समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भावनगर, ने 20 व 21 जुलाई को शैक्षणिक और अनुसंधान के लिए बौद्धिक संपदा अधिकारों पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

सीएसएमसीआरआई के वरिष्ठ वैज्ञानिक और पीआरओ, डॉ. कान्ति भूषण पाण्डेय ने बताया कि

सीएसआईआर, नई दिल्ली मुख्यालय के आईपीयू से आमंत्रित डॉ. सीमा ने पेटेंट पर विशेष जोर देने के साथ आईपी



जागरूकता पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. शिबाजी घोष ने बताया कि आईपीआर न केवल अनुसंधान बल्कि हमारे दैनिक जीवन में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

समारोह में सीएसएमसीआरआई के निदेशक डॉ. कन्नन श्रीनिवासन, बिजनेस डेवलपमेंट प्रमुख डॉ. कमलेश उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. कांडीबन ने किया। कार्यक्रम ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों मोड में था जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा महोत्सव के अंतर्गत सीएसआईआर-सीरी में बौद्धिक संपदा जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार के राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा जागरूकता मिशन National Intellectual Property Awareness Mission (NIPAM) द्वारा देशभर में राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

इसके अंतर्गत कार्यशालाओं / प्रदर्शनियों आदि के माध्यम से वैज्ञानिक एवं अन्य क्षेत्रों में पेटेन्ट, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट आदि से संबंधित विषयों से स्कूलों एवं कॉलेजों की किशोर जनशक्ति को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

इस संबंध में सीएसआईआर मुख्यालय से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुपालन में सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 10-11 जुलाई, 2023 के दौरान दो-दिवसीय इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी अवेयरनेस वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में पिलानी एवं निकटवर्ती विद्यालयों—बिरला बालिका विद्यापीठ, नेशनल पब्लिक स्कूल, बिरला स्कूल, सीरी विद्या मंदिर, बिरला शिशु विहार, बिरला पब्लिक स्कूल, राकेश अकैडमी, मंडेलिया स्कूल आदि विद्यालयों तथा बिट्स-पिलानी, बीकेबीआईईटी आदि महाविद्यालयों के 750 से अधिक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला का संयोजन एवं संचालन आई पी यूनिट के प्रमुख डॉ. नीरज कुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने किया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सीएसआईआर-सीरी के निदेशक



डॉ. पी सी पंचारिया ने की। अपने आरंभिक संबोधन में डॉ. पंचारिया ने विद्यार्थियों का स्वागत किया और उन्हें 'इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी' का आशय समझाते हुए इसके महत्व से अवगत कराया। विद्यार्थियों के साथ अपने संस्मरण साझा करते हुए उन्होंने कहा कि देश इस समय अत्यंत महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है।

उन्होंने कहा कि आजादी के अमृत काल में भारत को विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में शामिल करने के लिए हम सभी को अपने कर्तव्य का पालन करना होगा। विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए डॉ. पंचारिया ने कहा कि भारत को वर्ष 2047 तक पुनः विश्व गुरु बनाने के लिए हमें माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा बताए लक्ष्य की प्रप्ति के लिए अपने-अपने स्तर पर छोटी से छोटी समस्या या चुनौती पर चिंतन करते हुए उसका नवाचारी समाधान सुझाना

चाहिए। अपने संबोधन में उन्होंने नवाचार शब्द को रेखांकित करते हुए कहा कि नवाचार केवल वैज्ञानिक क्षेत्र में ही हो यह अनिवार्य नहीं है, यह किसी भी क्षेत्र में हो सकता है।

उन्होंने कहा कि देश के इस अभियान में वैज्ञानिक, किसान, चिकित्सक, इंजीनियर, सैनिक, मजदूर, शिक्षक आदि के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी अपना योगदान देना होगा। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. नीरज कुमार, प्रधान वैज्ञानिक ने दो-दिवसीय कार्यशाला में बौद्धिक संपदा के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित व्याख्यान दिए।

उन्होंने अपने रोचक व्याख्यानों में विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से प्रतिभागी विद्यार्थियों को कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, पेटेन्ट आदि के महत्व की जानकारी दी एवं इनकी प्रक्रिया पर प्रकाश डाला।



अपने व्याख्यान में उन्होंने पेटेन्ट प्राप्त करने की विधि और इससे संबंधित अन्य बातों की भी जानकारी दी। परस्पर चर्चा के दौरान डॉ नीरज ने विद्यार्थियों के द्वारा इस रोचक विषय के संबंध में पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा शांत की।

कार्यक्रम के दौरान अलग-अलग सत्रों में विद्यार्थियों को वीडियो फिल्म के माध्यम से संस्थान की स्थापना एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत कराया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों ने प्रतिभागी विद्यार्थियों को संस्थान के विज्ञान संग्रहालय में सीरी की शोध गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी दी।

राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा जागरूकता मिशन (निपम) यह भारत सरकार का महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है जिसके अंतर्गत स्कूल एवं कॉलेज स्तर के विद्यार्थियों को बौद्धिक संपदा के महत्व से अवगत कराते हुए इस क्षेत्र में प्रशिक्षित करना है।

आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों में नवाचार हेतु विचारों का पोषण करना इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य है।

भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) को भारत में आईपीआर के कार्यान्वयन और भविष्य के विकास के समन्वय, मार्गदर्शन और निगरानी के लिए

नोडल विभाग के रूप में नियुक्त किया गया है।

बौद्धिक संपदा क्या है? बौद्धिक संपदा (आईपी) आरंभ से ही महत्वपूर्ण अवधारणा रही है।

इसका आशय ऐसी रचनाओं से है जिनका सृजन मनुष्य अपने मस्तिष्क से स्वयं करता है। इसमें वैज्ञानिक आविष्कार, साहित्य और कला संबंधी कार्य, डिजाइन तथा वाणिज्य और व्यापार में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक चिह्न (लोगो), नाम एवं चित्र शामिल हैं।

कानून की भाषा में बौद्धिक संपदा (आईपी) को पेटेन्ट, कॉपीराइट और ट्रेडमार्क द्वारा संरक्षित किया जाता है।

सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ एन कलैसेल्वी का सीएसआईआर - केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान दौरा

8 जून, 2023 को डॉ एन कलैसेल्वी, सीएसआईआर की महानिदेशक और सीएसआईआर के संयुक्त सचिव श्री महेंद्रा कुमार गुप्ता ने अपनी उपस्थिति से प्रयोगशाला की शोभा बढ़ाई।

सीएसआईआर-सीबीआरआई के निदेशक प्रोफेसर आर प्रदीप कुमार ने सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी का सम्मानपूर्वक स्वागत किया। उन्होंने अपने भाषण में महानिदेशक के आगमन के लिए गहरा आभार व्यक्त किया, जहां उन्होंने उनकी मौजूदगी की महत्ता और सीबीआरआई टीम पर पॉजिटिव प्रभाव पर जोर दिया। निदेशक ने डॉ. एन. कलैसेल्वी के नेतृत्व में सीएसआईआर द्वारा दिए गए अटल सहयोग और मार्गदर्शन को इंगित दी। समारोह का संचालन डॉ. प्रदीप चौहान ने किया।

डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई के वैज्ञानिकों, व कार्मिकों को सम्बोधित किया। उन्होंने अपने भाषण में सीबीआरआई द्वारा किए गए विभिन्न महत्वपूर्ण कार्यों व असाधारण योगदानों की प्रशंसा की। उन्होंने उनमें से कुछ कार्यों का विशेष रूप से उल्लेख किया: नवीन संसद भवन के निर्माण कार्य, जोशीमठ में आपदा प्रबंधन के प्रयास, और सीबीआरआई द्वारा आयोजित "एक सप्ताह, एक प्रयोगशाला" कार्यक्रम प्रमुख थे। उन्होंने बताया कि संसद भवन में होने वाले निर्माण कार्य में उच्च गुणवत्ता वाले समाधानों की प्रस्तुति देकर सीएसआईआर-सीबीआरआई ने लोगों का संस्थान के प्रति विश्वास को मजबूती प्रदान की।

उन्होंने जोशीमठ में हुई आपदा प्रबंधन समाधानों में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका की प्रशंसा की। साथ ही उन्होंने संस्थान द्वारा अल्प समय में आयोजित "एक हफ्ते, एक प्रयोगशाला" कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा की।

इस आयोजन में स्थापित उच्चस्तरीय कार्यक्रमों ने एक नए आयाम स्थापित किया है जो कि सीएसआईआर की अन्य प्रयोगशाला के लिए अनुसरणीय है। इसके लिए उन्होंने संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप कुमार के उत्कृष्ट नेतृत्व की प्रशंसा की।

ओजस्वी व सम्बोधन के बाद, डॉ. एन. कलैसेल्वी ने सीएसआईआर-सीबीआरआई के हाल ही में उद्घाटित प्रदर्शनी दीर्घा का अवलोकन किया।

प्रदर्शनी दीर्घा में संस्थान की उपलब्धियों, चल रही परियोजनाओं और इमारती सामग्री, संरचनात्मक इंजीनियरिंग, और आपदा प्रबंधन से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में कटिंग-एज अनुसंधान को प्रदर्शित किया गया है।

उन्होंने प्रदर्शनी की विभिन्न वस्तुओं में गहरी रुचि ली और शोधकर्ताओं के साथ संवाद किया, उनके प्रयासों और प्रगति की सराहना की।

सीएसआईआर की महानिदेशक डॉ. एन. कलैसेल्वी का आगमन, सीएसआईआर



—केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान के लिए एक गौरवपूर्ण और प्रेरणादायक अवसर था। संस्थान द्वारा की जाने वाली कार्यों की सराहना ने सीबीआरआई टीम के मनोबल को और बढ़ाया।

इस यात्रा ने डॉ. एन. कलैसेल्वी को सीबीआरआई द्वारा वैज्ञानिक अनुसंधान और निर्माण के क्षेत्र में संस्थान के उल्लेखनीय योगदानों की प्रगति को देखने का एक अवसर प्रदान किया।

सीएसआईआर-सीबीआरआई में कार्यस्थल समरसता पर व्याख्यान आयोजित



प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार, निदेशक सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट ने 27 जून, 2023 को सीएसआईआर-सेंट्रल बिल्डिंग रिसर्च इंस्टीट्यूट (सीबीआरआई) के कर्मचारियों को “मानव-मानव संबंधों के माध्यम से कार्यस्थल में समरसता” विषय पर एक व्याख्यान दिया। उनके व्यापक अनुभव और मानवीय परिचय के बारे में गहरे से ज्ञान के साथ, प्रोफेसर आर. प्रदीप कुमार ने कार्यस्थल में समरसता को बढ़ावा देने के महत्व पर प्रकाश डाला।

उन्होंने यह भी जोर दिया कि जब व्यक्ति अपने सहकर्मियों के साथ सकारात्मक और सम्मानपूर्वक संबंध बनाते हैं, तो यह न केवल कार्यस्थल के वातावरण

को सुधारता है बल्कि यह उत्पादकता में भी योगदान देता है और शांतिपूर्ण वातावरण का निर्माण करता है।

उनके व्याख्यान में, डॉ. कुमार ने मजबूत मानव-मानव संबंध बनाने के लिए प्रभावी संचार, सहानुभूति, और सहयोग के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उसमे आज के मानवों के सामाजिक मुद्दों की जड़ के बारे में भी चर्चा की।

उन्होंने शिक्षा-संस्कार के बारे में बात की और शिक्षा के योग्यता के विकास को सुविधाजनक मानवीय आचरण के लिए की जरूरत को बताया।

आगे बढ़ते हुए, उन्होंने निरंतर सुख और समृद्धि के लिए अलग-अलग स्तरों की बात की और मानव-मानव संबंधों के

बारे में संक्षेप में चर्चा की। उन्होंने जोर दिया कि सक्रिय रूप से सुनना, विचारों को स्पष्ट ढंग से व्यक्त करना, और विविध दृष्टिकोणों को मूल्य देना आवश्यक है। खुले संवाद की संस्कृति और समझदारी को पोषित करके, डॉ. कुमार ने सुझाव दिया कि टकराव और गलतफहमियों को कम किया जा सकता है, जिससे एक सघन और सहायक कार्यस्थल वातावरण बन सकता है।

सीएसआईआर-निस्पर ने “वसुधैव कुटुंबकम् के लिए योग” विषय पर स्वस्तिक व्याख्यान का आयोजन किया

एस-व्यासा विश्वविद्यालय के चांसलर, पद्मश्री डॉ. एच.आर. नागेंद्र ने कीनोट संबोधन दिया

सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (निस्पर) ने 25 जुलाई 2023 को अपने स्वस्तिक (वैज्ञानिक रूप से मान्य सामाजिक पारंपरिक ज्ञान) प्रभाग के तहत एक व्याख्यान का आयोजन किया। स्वस्तिक सीएसआईआर-निस्पर द्वारा समन्वित एक पीएमओ निगरानी वाली पहल है। यह निस्पर-स्वस्तिक व्याख्यान श्रृंखला का चौथा सत्र था। यह व्याख्यान “वसुधैव कुटुंबकम् के लिए योग” विषय पर केन्द्रित था।

निस्पर-स्वस्तिक व्याख्यान सत्र एक महत्वपूर्ण अवसर था जिसमें प्रख्यात विद्वानों, शोधकर्ताओं, योग चिकित्सकों और उत्साही प्रतिभागियों का जमावड़ा देखा गया, जो योग के गहन दर्शन और वैश्विक परिवार को बढ़ावा देने में इसकी प्रासंगिकता जानने के लिए एक साथ आए थे।

श्री हसन जावेद खान, मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर-निस्पर ने स्वागत भाषण दिया और स्वस्तिक पर व्यावहारिक परिचयात्मक टिप्पणियाँ दीं, जिससे बाद ज्ञानवर्धक सत्रों का माहौल तैयार हो गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एस-व्यासा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु के चांसलर पद्मश्री डॉ. एच आर नागेंद्र का आकर्षक मुख्य भाषण था। योग के क्षेत्र में डॉ. नागेंद्र के विशाल ज्ञान और विशेषज्ञता ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर



दिया क्योंकि उन्होंने मानवता को एकजुट करने और ‘वसुधैव कुटुंबकम्’ की अवधारणा को साकार करने में योग की परिवर्तनकारी शक्ति को स्पष्ट रूप से समझाया। उनके संबोधन ने उपस्थित लोगों को व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के लिए योग को अपने जीवन में शामिल करने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम का समापन सीएसआईआर-निस्पर की प्रधान वैज्ञानिक डॉ. चारु लता के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

जो ज्ञान हमें विरासत में मिला है, उस पर गर्व और आत्मविश्वास की भावना बलवती करने के लिए जागरूकता पैदा करना और साक्ष्य-आधारित पारंपरिक प्रथाओं/ज्ञान को जनता के बीच साझा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रोफेसर रंजना

अग्रवाल, निदेशक सीएसआईआर-निस्पर और प्रख्यात विशेषज्ञों की संचालन समिति के मार्गदर्शन में, सीएसआईआर-निस्पर के वैज्ञानिकों की एक टीम ने राष्ट्रीय पहल “स्वस्तिक”—वैज्ञानिक रूप से मान्य सामाजिक पारंपरिक ज्ञान शुरु की। इस पहल के एक भाग के रूप में, वैज्ञानिक रूप से मान्य भारतीय पारंपरिक ज्ञान पर सरलीकृत रचनात्मक सामग्री को अंग्रेजी और विभिन्न भारतीय भाषाओं में डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रसारित किया जा रहा है। अब तक ऐसी 37 कहानियाँ अंग्रेजी और 17 भारतीय भाषाओं में 09 पारंपरिक ज्ञान क्षेत्रों में प्रसारित की जा चुकी हैं। कोई भी लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर /NISCP-SVASTIK के माध्यम से स्वस्तिक तक पहुंच सकता है।

नीरी द्वारा प्रदूषित जल निकायों के पुनरुद्धार के लिए उचित प्रौद्योगिकी की संस्तुति

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद—राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर—नीरी) ने अनुपचारित अपशिष्ट जल के अवैध निर्वहन के कारण प्रदूषण से प्रभावित जल निकायों के कार्याकल्प के लिए उपयुक्त तकनीक की पहचान करने के लिए एक विस्तृत व्यवहार्यता अध्ययन की सिफारिश की है।

संस्थान के वैज्ञानिकों की दो सदस्यी टीम ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) द्वारा जारी निर्देश के आधार पर मई के दूसरे सप्ताह में एर्नाकुलम, अलाप्पुझा और तिरुवनंतपुरम में चुनिंदा प्रदूषित हिस्सों पर एक साइट मूल्यांकन किया था।

ट्रिब्यूनल की दक्षिणी पीठ ने सरकार से नीरी द्वारा प्रस्तावित फाइटोरिड अपशिष्ट जल उपचार तकनीक जैसे अस्थायी उपायों को लागू करने के लिए कहा था, क्योंकि नहरों को पुनर्जीवित करने की परियोजनाओं को हमेशा के लिए लंबित नहीं रखा जा सकता है।

एजेंसी ने सूचित किया है कि वह प्रदूषित स्थलों के लिए लागू उपयुक्त

उपचार तकनीक पर एक विस्तृत परियोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करेगी।

केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने नीरी से कार्य के दायरे और वित्तीय बजट के साथ एक परियोजना

प्रस्ताव तुरंत प्रस्तुत करने का अनुरोध किया है। इसने सुझाव दिया है कि ऐसी परियोजनाओं को शुरू करते समय अपनी तकनीकी क्षमता को मजबूत करने के लिए परियोजना के लिए सुचित मिशन, स्थानीय निकायों, राष्ट्रीय अंतःविषय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान, तिरुवनंतपुरम और इंजीनियरिंग कॉलेजों की सहायता मांगी जा सकती है।

नीरी की टीम ने पेरंडूर और एडप्पल्ली नहरों, करुनागप्पल्ली में पल्लीकल्लार खंड, मणिचिथोडु, अष्टमुडी झील और तिरुवनंतपुरम में पट्टम, पट्टूर, कन्नमूला और राजाजी नगर में सीवेज पंपिंग स्टेशनों का



निरीक्षण किया था। वैज्ञानिकों ने फाइटोरिड प्रौद्योगिकी के विभिन्न पलुओं और इसकी व्यवहार्यता पर अधिकारियों के साथ चर्चा की। प्रौद्योगिकी में एक निर्मित आर्द्रभूमि शामिल है जो विशेष रूप से नगरपालिका, शहरी, कृषि और औद्योगिक अपशिष्ट जल के उपचार के लिए डिजाइन की गई है।

प्रणाली कुछ विशिष्ट पौधों का उपयोग करती है जो सीधे अपशिष्ट जल से पोषक तत्वों को अवशोषित कर सकते हैं लेकिन उन्हें मिट्टी की आवश्यकता नहीं होती है। ये पौधे पोषक तत्व सिंकर और रिमूवर के रूप में कार्य करते हैं।

सीएसआईआर-एनबीआरआई, लखनऊ द्वारा शहरी हरियाली को बढ़ाने के लिए मियावाकी वन बनाने की तैयारी

पिछले कुछ वर्षों में औद्योगिक और वाहन उत्सर्जन में पर्याप्त वृद्धि के कारण, लखनऊ सहित कई शहरी क्षेत्रों में हवा की गुणवत्ता गिरावट के गंभीर स्तर पर पहुंच गई है।

लखनऊ में वायु गुणवत्ता को हुए नुकसान को कम करने के प्रयास में, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान (एनबीआरआई) 1,000 वर्ग मीटर के क्षेत्र में एक घना जंगल स्थापित करेगा।

बंथरा में एनबीआरआई के दूरस्थ अनुसंधान केंद्र में स्थापित किया जाने वाला कृत्रिम रूप से विकसित जंगल मियावाकी तकनीक का उपयोग करके बनाया जाएगा।

आगामी वनों के बारे में अधिक जानकारी

कथित तौर पर, वनीकरण परियोजना एनबीआईआई के वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के सहयोग से शुरू की जाने वाली है। मियावाकी तकनीक का उपयोग करते हुए, प्रत्येक वर्ग मीटर स्थान में एक बड़े पेड़, एक मध्यम आकार के पेड़, एक झाड़ी और एक औषधीय पौधे के पौधे शामिल होंगे, जिन्हें परिणामों को अनुकूलित करने के लिए रणनीतिक रूप से व्यवस्थित किया जाएगा।

क्षेत्र में जामुन, अर्जुन और नीम जैसे बड़े पेड़ों की स्वदेशी किस्में, अमरुद और कचनार सहित मध्यम आकार के पेड़ और अन्य औषधीय पौधे लगाए जाएंगे।

इसके अलावा, यह शहर का तीसरा जंगल होगा

जो इस तकनीक का उपयोग करके विकसित किया जाएगा। इससे पहले, ऐसे दो जंगल अलीगंज क्षेत्र और लखनऊ के बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (बीबीएयू) के पास बनाए गए हैं।

मियावाकी वन तकनीक पौधों की 10 गुना तेजी से वृद्धि की अनुमति देती है

मियावाकी तकनीक का उपयोग गैर-वन

क्षेत्र में तेज गति से वन वृक्ष उगाने के लिए किया जाता है। यह तकनीक सबसे पहले एक प्रसिद्ध जापानी वनस्पतिशास्त्री, अकीरा मियावाकी द्वारा पेश की गई थी, और यह प्राकृतिक जंगल के 30 गुना घनत्व के साथ पौधों के 10 गुना तेजी से विकास की अनुमति देती है।

यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है और न्यूनतम श्रम की मांग करता है, यह देखते हुए कि मुख्य रूप से नियोजित पौधे



आत्मनिर्भर हैं, जिससे उर्वरक और सिंचाई जैसे लगातार रखरखाव कार्यों की आवश्यकता कम हो जाती है।

इसके अलावा, इस तकनीक का उपयोग करके उगाए गए पेड़ 3 साल की अवधि के भीतर अपना परिपक्व कद प्राप्त कर लेते हैं।

इसके अतिरिक्त, मियावाकी तकनीक

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक
सीएसआईआर समाचार

पहले ही पूरे भारत में कई पहलों के लिए वन स्थापित करने में सफल साबित हुई है।

इसमें इंदौर में देवी अहिल्या सिटी फॉरेस्ट परियोजना में इसका सफल अनुप्रयोग भी शामिल है।